द्विवर्षीय संन्यास जीवनशैली अनुभव

(भारतीयों के लिये)

संन्यास पीठ

पादुका दर्शन, मुंगेर, बिहार

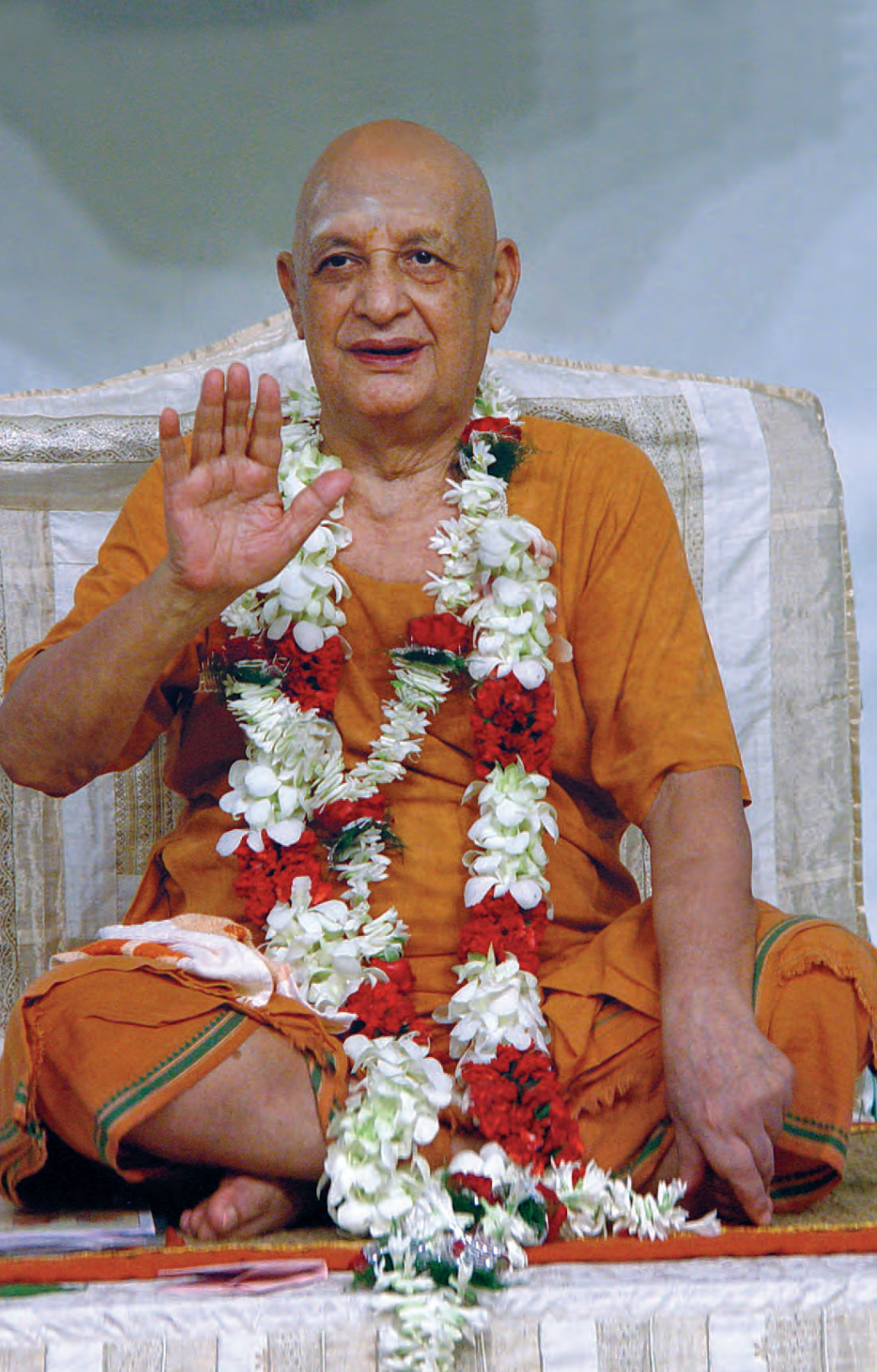

संन्यास की महिमा

सच्चा संन्यासी इस संसार का एकमात्र चक्रवर्ती सम्राट् होता है। वह कभी कुछ लेता नहीं, सिर्फ देता ही जाता है। संन्यासियों ने ही अतीत में आश्चर्यजनक काम किया, और संन्यासी ही वर्त्तमान एवं भविष्य में अद्भुत चमत्कार करके दिखायेंगे। एक संन्यासी ही वास्तविक लोक-संग्रह कर सकता है, क्योंकि वह दिव्य-ज्ञान से युक्त होता है। एक समर्थ संन्यासी पूरे विश्व की नियति को बदलकर रख सकता है। अकेले शंकराचार्य ने भारत भर में दिग्विजय कर अद्वैत वेदान्त की परम्परा को प्रतिष्ठित किया।

परमहंस संन्यासी दो रोटी और दो धोती पर जीकर देश के कोने-कोने में जाकर, घर-घर में उपनिषद्, रामायण, भागवत और गीता का ज्ञान वितरित करते हैं। सारा समाज उनका अत्यधिक ऋणी है। उनके काव्य और ग्रन्थ हमारे लिए आज भी ज्ञान और प्रेरणा के स्रोत हैं। अवधूत गीता के चन्द श्लोक पढ़कर देखिये। आप में तुरन्त उदात्त आध्यात्मिक विचारों का उदय होगा; सभी प्रकार की निराशा, विषाद और चिंता छूमंतर हो जाएगी।

जिस तरह गणित, विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति जैसे विषयों में स्नातकोत्तर और शोध विद्यार्थी होते हैं, उसी तरह स्नातकोत्तर योगी और संन्यासी भी होने चाहिए, जो अपना समय स्वाध्याय और अनुसंधान में व्यतीत कर आत्मा पर शोध कर सकें। ऐसे संन्यासियों का भरण-पोषण सद्-गृहस्थों का कर्त्तव्य है। बदले में संन्यासी उनके आध्यात्मिक योग-क्षेम का भार वहन करेंगे। इस तरह संसार-चक्र निर्विघ्न रूप से चलता रहेगा और सर्वत्र सुख, शांति और समृद्धि व्याप्त रहेगी।

Swami Sivanand

ॐ

भावी मिशन की परिकल्पना

श्री स्वामी सत्यानन्द सरस्वती को अंतर्मन में एक महान् मिशन की झलक मिली, जिसके पश्चात् उन्होंने बिहार योग विद्यालय की स्थापना की और आगे चलकर संन्यास प्रशिक्षण सत्रों का संचालन प्रारम्भ किया। संन्यास जीवन के एक नवोदित रूप को प्रस्तुत एवं प्रवर्त्तित करने के लिए आयोजित ये सत्र अपने आप में अपूर्व थे। आने वाली पीढ़ियों को संन्यास जीवन का यह नवीन स्वरूप हस्तान्तरित किया जा सके, यही इन सत्रों का उद्देश्य था।

श्री स्वामीजी की यह परिकल्पना सन् 2022 में आरम्भ होने वाले द्विवर्षीय संन्यास जीवनशैली अनुभव सत्र में साकार होने जा रही है। स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती के मार्गदर्शन में संचालित यह सत्र श्री स्वामी सत्यानन्द जी के जीवन और मिशन से प्रेरित है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक मानव की चेतना को उन्नत और उदात्त बनाना है।

आध्यात्मिक जीवन के वास्तविक अर्थ को समझना और मानवता की विकास-यात्रा में उसके स्थान और योगदान को पहचानना इस सत्र का प्रयोजन है। आज के युग में जो साधक अपने आध्यात्मिक उत्थान के प्रति पूर्णतया समर्पित होना चाहते हैं, उनके लिए योग, त्याग और संन्यास के अर्थ और प्रयोजन को स्पष्ट करने के लिए ऐसे सत्रों की अनिवार्यता है।

संन्यास जीवन का परिचय दिलाने वाला यह सत्र ऐसे साधकों के लिए नहीं है, जो समाज से अलग किसी स्थान में एकान्त साधनात्मक जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, बल्कि इसमें साधकों को जीवन के सभी पक्षों और आयामों से परिचित कराया जाएगा ताकि जीवन की घटनाओं से वे शिक्षा प्राप्त कर सकें। साधक ऐसी किसी विचारधारा को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं, जो चेतना के स्वाभाविक विकास में रुकावट बने।

वैकल्पिक जीवन-मार्ग

श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने कहा कि आज मानव मन, समाज और संसार में जो अव्यवस्था, दु:ख और उपद्रव हैं, वे मानव चेतना के प्रतिबिम्ब मात्र हैं। उन्हें आभास हुआ कि मनुष्यों के आन्तरिक एवं बाह्य जीवन विकास के लिए एक व्यावहारिक और सुलभ मार्ग उपलब्ध कराना होगा, मानव मन को प्रेरणा की नयी किरणों से आलोकित करना होगा, चिन्तन के लिए नयी विचारधाराएँ प्रदान करनी होंगी, तभी मानव जीवन बेहतर बन सकेगा।

इस प्रयोजन को सिद्ध करने के लिए पहले कुछ चुने हुए व्यक्तियों की चेतना के स्तर को उठाना होगा। ये चयनित व्यक्ति मानवता तथा स्वयं के उत्थान के निमित्त अपने जीवन की एक अवधि समर्पित करने के लिए कटिबद्ध होंगे। ऐसे दृढ़प्रतिज्ञ पुरुषों और महिलाओं को यौगिक, वैदिक एवं सनातन परम्परा का विशेष प्रशिक्षण और मार्गदर्शन दिया जायेगा। जीवन के सभी आयामों में आध्यात्मिकता का अनुभव कराया जायेगा।

अनवरत गतिविधियाँ

इस सत्र में क्रियाशीलता निरन्तर बनी रहेगी। दिन और रात में अन्तर नहीं होगा। व्यर्थ के विचारों, शंकाओं या भ्रमों के लिए समय नहीं रहेगा। सत्र का लक्ष्य व्यक्तित्व के सभी आयामों पर एक सम्पूर्ण, समन्वित जीवनशैली विकसित करना है। इसके लिये संन्यास के कुछ व्यावहारिक और अनुभवात्मक पक्षों पर बल दिया जायेगा –

- सहयोग – सत्संकल्प की पूर्ति के लिए साथ मिलकर काम करना
- सेवा – प्रेम और करुणा युक्त नि:स्वार्थ कर्म
- साधना – व्यक्तित्व रूपान्तरण की प्रक्रिया
- स्वाध्याय – आत्मान्वेषण और आत्मसुधार का पथ
- संयम – क्षण-प्रति-क्षण सजगता का विकास
- समर्पण – आन्तरिक दिव्यता से जुड़ना

अपनी मानसिक क्षमता का अधिकतम सीमा तक विस्तार करना होगा। स्वयं को बेहतर ढंग से समझने तथा अन्य के प्रति अधिक संवेदनशील बनने के लिए मन के सभी आंतरिक अवरोधों को समाप्त करना पड़ेगा। स्वयं को समझे बगैर दूसरों को नहीं समझा जा सकता, न उनकी सहायता की जा सकती है।

सत्र का उद्देश्य

सत्र की अवधि में साधक अपने अंतर्मन में संस्कारों के क्षय होने का अनुभव करेंगे। दबे और छिपे हुए विचार मन की सतह पर प्रकट होंगे, जीवनभर के संचित भय और चिन्ताएँ निष्कासित होंगे। संन्यास जीवन एक प्राप्ति का साधन होगा, जिसका उद्देश्य जीवन में यौगिक चेतना एवं आत्म-सजगता की उपलब्धि और अभिव्यक्ति करना है।

सत्र का प्रयोजन ऐसे सशक्त एवं सृजनशील व्यक्तित्वों का विकास करना है, जो जीवन के सभी स्तरों पर सभी प्रकार की परिस्थितियों का रचनात्मक एवं सकारात्मक ढंग से सामना करने में सक्षम होंगे।

बहुआयामी अनुभव

आश्रम में विविध लोगों के साथ सेवा और अन्य क्रिया-कलापों में भाग लेते समय जीवन के सभी रूपों और रंगों का अनुभव होगा। कक्षाओं, सत्संगों, व्याख्यानों, संगोष्ठियों, योग शिविरों और सम्मेलनों की सामग्री से संन्यासी पुस्तकों का संकलन, सम्पादन और प्रकाशन करेंगे। व्यावहारिक प्रशिक्षण के अंग के रूप में संभाषण-कला के विकास के लिए अवसर प्रदान किये जाएँगे। संन्यास पीठ, योग पीठ और रिखिया पीठ में आश्रम व्यवस्था, भोजन बनाना, साफ-सफाई, टंकण आदि दफ्तरी काम-काज, बागवानी, प्रकाशन सम्बन्धी कार्य, अध्यापन, शोध एवं अन्य सेवा कार्यों में सभी मिलकर सहयोग देंगे।

एक व्यावहारिक, रचनात्मक, उत्तरदायी एवं उदात्त आध्यात्मिक व्यक्तित्व का विकास इस सत्र का लक्ष्य होगा। सृजनात्मक चिन्तन को प्रोत्साहित एवं प्रेरित किया जायेगा। अपने अहं को दबाना या खोना नहीं है, बल्कि शरीर, मन और आत्मा का आध्यात्मीकरण करना है। सत्र का वातावरण पूर्ण रूप से आध्यात्मिक रहेगा, जिसमें व्यक्तिगत पुरुषार्थ और अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित किया जाएगा।

नव संन्यासियों से

संन्यास पूर्ण साधना है,
बहिरंग, अन्तरंग दोनों,
अहंकार रहित चैतन्य प्रकट होता है, चैतन्य प्रकाशित होता है।

संन्यासी की साधना कैसी?
देखते रहना है, करना नहीं।

योग-साधना संन्यासी के लिए स्थूल साधनाएँ हैं,
सूक्ष्म का मैल इनसे छँटता नहीं,
और न सद् वस्तु का बोध होता है।

सबसे पहले आश्रम प्रवेश करो,
दीर्घकाल तक सेवा व्रत धारण करो,
अपने को छोटा और हल्का बनाओ।

संन्यासी के लिए न कोई साधन
और न कोई साध्य।
वहाँ तो तुरीयावस्था की भी गिनती नहीं,
क्योंकि समरसता को पाना है।

चैतन्यावस्था सनातन है,
उसका न उदय है न अस्त –
वह जानी नहीं जा रही,
केवल इस समस्या को सुलझाना है।

शिखा सूत्र का त्याग, पूर्वाश्रम-संगों का त्याग,
जाति, कुल, धर्म के अभिमान का त्याग
ये स्थूल लक्षण हैं।

संन्यास की अवस्थाएँ अपने आप प्रकटती हैं,
सेवा-व्रत से ढक्कन खुल जाता है,
गुरु-तत्त्व संन्यास का रहस्य है।

बुखार उतरते कुपथ नहीं करना,
संन्यास लेने पर भी कुपथ नहीं करना,
अलग रहना संग-विवर्जित होकर
विवाह-श्राद्ध-अन्त्येष्टि से पृथक् –
इसका अर्थ समझना कठिन है।

संन्यास साधना फल जाए तो समझो
इतिहास और समाज पवित्र हो जाएँगे।
एक संन्यासी एक युग का निर्माता होता है
और एक दर्शन का द्रष्टा, परम्पराओं का अगुआ।

पवित्र संकल्प लेकर
संन्यासाश्रम में दीक्षित होओ।

– स्वामी सत्यानन्द सरस्वती

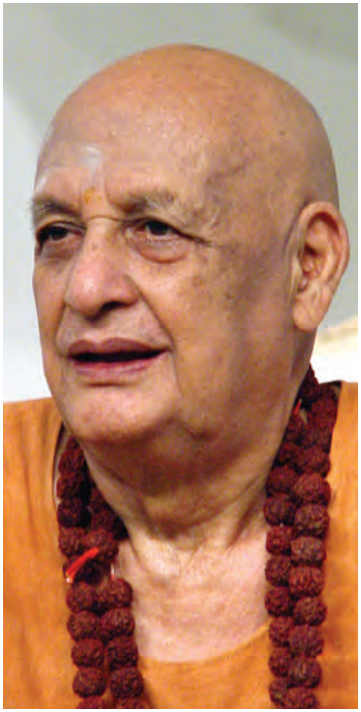

संन्यासियों की माला

यह स्वामी शिवानन्द जी का स्वप्न था,
जिसे स्वामी सत्यानन्द जी ने साकार किया।
यह भारत का प्रथम स्वप्न है –
विश्व को जाग्रत मानव देना।

शरीर और संसार के प्रलोभन से रहित,
केवल समर्पण, सेवा, स्वाध्याय, साधना
और अप्रतिहत प्रवाहमान जलमाला के सदृश
जीवन जो जी सकेंगे,
वे ही समाज की आध्यात्मिक पिपासा को शान्त कर सकेंगे।

संन्यास त्याग नहीं,
बलिदान की तैयारी है,
बलिदान मृत्यु नहीं,
सेवा के लिए समर्पित जीवन है।

काषाय धारण करने से जीवन नहीं रंगता,
जब वस्त्र की चिन्ता छूट जाती है,
तब जीवन स्वत: रंग जाता है।
जटा-केश से संन्यासी नहीं होता,
जो अहर्निश तत्पर है,
उसे केश-विन्यास की सुध कहाँ?

संन्यासी का पागलपन होता है –
कर्तव्य – गुरु निर्देश के प्रति,
संसार, मानवता और ईश्वर के प्रति।

– स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती

संन्यास पीठ

सन् 2009 में महासमाधि से पहले स्वामी सत्यानन्द सरस्वती ने भारत की सांस्कृतिक और संस्कारात्मक धरोहर को सामाजिक जीवन का अभिन्न अंग बनाने के उद्देश्य से अपने आध्यात्मिक उत्तराधिकारी, स्वामी निरंजनानन्द सरस्वती को संन्यास पीठ की स्थापना का आदेश दिया।

श्री स्वामीजी की प्रथम पुण्यतिथि, 6 दिसम्बर 2010 के पावन दिन संन्यास पीठ का जन्म हुआ। उनके आदेशानुसार यह एक ऐसा केन्द्र होगा जो संन्यास के उच्च आदर्शों के प्रशिक्षण और संरक्षण के प्रति समर्पित होगा, जहाँ मनुष्य अपने जीवन में संस्कृति का निर्माण करना जान सकेगा।

हमारे ऋषि-मुनियों, मनीषियों और पूर्वजों ने एक ऐसी संस्कृति का निर्माण किया, जिसका अनुसरण हम आज तक कर रहे हैं। उसी संस्कृति के बल पर आज हमारी सभ्यता जीवित है। लेकिन इस भौतिक सम्मोहन के युग में मनुष्य अपने आप को, अपने जीवन की संस्कृति को भूल रहा है। जीवन की संस्कृति मनुष्य के विचारों और कर्मों को परिष्कृत करती है। *सम्यक् कृतेन इति संस्कृतिः* – जब मनुष्य-जीवन की कृतियाँ सम्यक् रूप से सम्पादित होती हैं, तब वे संस्कृति का रूप लेती हैं।

इसी सम्यकता का पाठ हमें सीखना और सिखाना है। संन्यास जीवन पद्धति के आदर्शों को एक व्यावहारिक रूप में समाज में लाना है ताकि हर व्यक्ति अपने जीवन में संस्कृति का अनुभव कर सके। अपने मन को उन्नत बनाने की यह एक जीवन शैली है, जिसके लिए अवश्य ही हम प्रयास और साधना कर सकते हैं। इसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए ऐतिहासिक मुंगेर नगरी में गंगा के पावन तट पर पादुका दर्शन गुरुकुल में संन्यास पीठ की स्थापना हुई है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें –
संन्यास पीठ, पादुका दर्शन, पी.ओ. गंगा दर्शन, किला मुंगेर, बिहार 811201
फोनः +91 09162 783904, 06344-222430, 06344-228603